https://www.aartichalisa.com/shiv-ji-ki-aartiyan-in-hindi-and-english

शिव आरती भजन

शीश गंग अर्द्धांग पार्वती,

सदा विराजत कैलासी।

नंदी भृंगी नृत्य करत हैं,

धरत ध्यान सुर सुख रासी॥

शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहे,

वहाँ बैठे हैं शिव अविनाशी।

करत गान-गन्धर्व सप्त स्वर,

राग रागिनी सब गासी॥

यक्ष-रक्ष-भैरव जहँ डोलत,

बोलत हैं वनके वासी।

कोयल शब्द सुनावत सुन्दर,

भ्रमर करत हैं गुंजा-सी॥

कल्पद्रुम अरु पारिजात,

तरु लाग रहे हैं लक्षासी ।

कामधेनु कोटिक जहँ डोलत,

करत फिरत हैं भिक्षासी ॥

सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित,

चन्द्रकान्त अवनी वासी।

छहों ऋतुनित फलत रहत हैं,

पुष्प चढ़त हैं वर्षासी॥

देव मुनिजन की भीड़ पड़त है,

निगम रहत जो नित गासी ।

ब्रह्मा, विष्णु जाको ध्यान धरत हैं,

कछु शिव हमको फरमासी ॥

ऋद्धि-सिद्धि के दाता शंकर,

सदा अनंदित सुखरासी ।

जिनको सुमिरन सेवा करते,

टूट जाय यम की फांसी ॥

त्रिशूलधर को ध्यान निरन्तर,

मन लगाय कर जो गासी ।

दूर करे विपता शिव तन की,

जन्म-जन्म शिवपद पासी ॥

कैलासी काशी के वासी,

अविनाशी मेरी सुध लीज्यो ।

सेवक जान सदा चरनन को,

आपन जान दरश दीज्यो ॥

तुम तो प्रभुजी सदा सयाने,

अवगुण मेरो सब ढकियो ।

सब अपराध क्षमाकर शंकर,

किंकर की विनती सुनियो ॥

शीश गंग अर्द्धांग पार्वती,

सदा विराजत कैलासी ।

नंदी भृंगी नृत्य करत हैं,

धरत ध्यान सुर सुख रासी ॥